दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समग्र मानव विकास हेतु पंचकोश की प्रासंगिकता

20 & 21 अप्रैल, 2026

आयोजक

शिक्षा विभाग

झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची

सह

आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग महाविद्यालय, राँची

एवं

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान

पृष्ठभूमि:

भारतीय ज्ञान परंपरा में मानव को केवल जैविक अथवा बौद्धिक सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि बहुस्तरीय चेतना-संपन्न अस्तित्व के रूप में देखा गया है। पंचकोश सिद्धांत इस समग्र दृष्टि का दार्शनिक प्रतिपादन करता है, जिसमें मानव विकास को पाँच आयामों—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय—के रूप में समझाया गया है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि व्यक्ति का वास्तविक और संतुलित विकास तभी संभव है, जब इन सभी कोशों का पोषण, परिष्कार और समन्वय किया जाए।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा प्रायः संज्ञानात्मक उपलब्धियों तक सीमित होती जा रही है, जबकि शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन, नैतिक विवेक और आध्यात्मिक जागरूकता जैसे आयाम अपेक्षाकृत उपेक्षित रह जाते हैं। मानसिक तनाव, मूल्य-संकट, सामाजिक विघटन तथा पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियाँ यह संकेत देती हैं कि शिक्षा और विकास की प्रक्रिया को पुनः समग्र दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है।

ऐसे संदर्भ में पंचकोश सिद्धांत भारतीय परंपरा का एक ऐसा सशक्त प्रतिमान प्रस्तुत करता है, जो शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आत्मचेतना के संतुलित विकास के माध्यम से पूर्ण मानव निर्माण की दिशा देता है। यह दृष्टिकोण न केवल व्यक्ति-निर्माण, बल्कि समाज और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

यह राष्ट्रीय सेमिनार पंचकोश सिद्धांत की दार्शनिक नींव, शैक्षिक प्रासंगिकता, मनोवैज्ञानिक आयाम, नीति-संदर्भ, और समकालीन चुनौतियों के संदर्भ में उसके व्यावहारिक उपयोग पर अकादमिक विमर्श का मंच प्रदान करेगा। सेमिनार का उद्देश्य भारतीय ज्ञान-परंपरा के इस समग्र विकास प्रतिमान को वर्तमान शिक्षा, शिक्षक-तैयारी, नेतृत्व और सामाजिक जीवन से जोड़ते हुए एक क्रियान्वयन योग्य रूपरेखा विकसित करना है।

उप-विषय:

- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पंचकोश सिद्धांत का दार्शनिक एवं शैक्षिक आधार तथा शिक्षक शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता
- अन्नमय कोश और शारीरिक शिक्षा आधारित विकास मॉडल
- प्राणमय कोश: जीवन-ऊर्जा, संतुलन एवं शैक्षिक हस्तक्षेप
- मनोमय कोश: भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शिक्षा में सामाजिक-संवेदनशीलता
- विज्ञानमय कोश: शिक्षा में विवेक, नैतिक निर्णय और आलोचनात्मक चिंतन
- आनन्दमय कोश: आत्मबोध, आंतरिक संतुलन और मूल्य-आधारित शिक्षा
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पंचकोश आधारित पाठ्यचर्या और मूल्यांकन के आयाम
- शिक्षक शिक्षा एवं शैक्षिक नेतृत्व के वर्तमान संदर्भ में पंचकोश की भूमिका
- मानसिक स्वास्थ्य, तनाव-प्रबंधन, तकनीकी युग एवं जीवन-कौशल शिक्षा में पंचकोश दृष्टिकोण
- वर्तमान वैश्विक एवं शैक्षिक चुनौतियाँ और पंचकोश आधारित मानव विकास प्रतिमान
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में पंचकोश आधारित इंटर्नशिप एवं प्रैक्टिकम मॉडल

सेमिनार का उद्देश्य:

इस राष्ट्रीय सेमिनार का उद्देश्य तैत्तिरीय उपनिषद् में प्रतिपादित पंचकोश सिद्धांत की दार्शनिक एवं शास्त्रीय आधारभूमि को स्पष्ट करते हुए समग्र मानव विकास की उसकी समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। सेमिनार शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आयामों के संतुलित संवर्धन हेतु शैक्षिक रणनीतियों पर विमर्श करेगा तथा पाठ्यचर्या, मूल्यांकन, शिक्षक-तैयारी और नेतृत्व

विकास में इसके एकीकरण की संभावनाओं को रेखांकित करेगा। साथ ही मानसिक स्वास्थ्य, जीवन-कौशल, नैतिक निर्णय क्षमता और वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में पंचकोश आधारित व्यावहारिक रूपरेखा विकसित करने का प्रयास किया जाएगा।

संस्थान के बारे में:

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के तहत की गई थी। इस विश्वविद्यालय की शुरुआत वर्तमान युग के प्रासंगिक शैक्षिक अभियानों पर विशेष ध्यान केंद्रित करने और अत्याधुनिक तकनीकों में अनुसंधान (रिसर्च) पर जोर देने के दृष्टिकोण के साथ हुई थी। यह अध्ययन के विभिन्न स्कूलों/विभागों में स्नातक (Under-Graduates), स्नातकोत्तर (Post-Graduates) और पीएच.डी. (Ph.D.) कार्यक्रम प्रदान करता है। विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम, अनुसंधान प्रस्तावों, सहयोग, संवाद और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में नए विचारों का स्वागत करता है। विश्वविद्यालय में वर्तमान में 9 स्कूल ऑफ स्टडीज हैं, जिनके अंतर्गत शिक्षा, अंग्रेजी अध्ययन, जीवन विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी और पर्यावरण विज्ञान आदि जैसे 25 विभाग संचालित होते हैं। विश्वविद्यालय में अंतःविषय (interdisciplinary) संवाद को विशेष महत्व दिया गया है।

शिक्षा विभाग के बारे में:

विश्वविद्यालय द्वारा शैक्षणिक वर्ष 2013-14 में चार वर्षीय एकीकृत (Integrated) बी.ए.-बी.एड. और बी.एससी.-बी.एड. कार्यक्रमों की शुरुआत के साथ शिक्षा विभाग खोला गया था। बाद में, विभाग ने वर्ष 2015-16 में 2 वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम भी शुरू किया। वर्तमान में, शिक्षा विभाग 'स्कूल ऑफ एजुकेशन' के अंतर्गत संचालित हो रहा है। शैक्षणिक वर्ष 2018-19 से, विभाग शिक्षा में पीएच.डी. (Ph.D.) का अनुसंधान (रिसर्च) कार्यक्रम और आईटीईपी (ITEP) भी प्रदान कर रहा है।

आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज:

आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज का संचालन विद्या विकास समिति, झारखण्ड द्वारा हो रहा है। महाविद्यालय की स्थापना के संकल्प को साकार करने में श्रीमती किरण जालान एवं ज्ञान प्रकाश जालान (ज्ञानू जी) की महत्वपूर्ण भूमिका है। आदित्य ज्ञानू जी के छोटे सुपुत्र थे, जिनका ईश्वरीय कालचक्र के कारण आकस्मिक निधन, वर्ष 2010 में एक सड़क दुर्घटना में हो गया था। अतः विद्या भारती की योजना एवं जालान परिवार की सामाजिक जिम्मेदारी के संयोग से आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। वर्तमान में महाविद्यालय को NAAC द्वारा ग्रेड-बी मान्यता प्रदान की गई है। स्थापना काल से ही महाविद्यालय शत प्रतिशत परिणाम देता आ रहा है।

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान (VBUSS):

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान (VBUSS) भारत में उच्च शिक्षा के समग्र विकास के लिए समर्पित एक राष्ट्रीय शैक्षणिक पहल है, जिसकी जड़ें भारतीय मूल्य, संस्कृति और ज्ञान परंपरा में निहित हैं। विद्या भारती के तत्वावधान में स्थापित, VBUSS भारत के सबसे बड़े गैर सरकारी शैक्षिक संगठनों में से एक है। VBUSS का उद्देश्य उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व, नवाचारी शैक्षणिक पद्धतियों तथा स्वदेशी ज्ञान को आधुनिक शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य से जोड़कर उच्च शिक्षण संस्थानों को सशक्त बनाना है।

VBUSS का लक्ष्य एक ऐसा परिवर्तनकारी शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है जो-

- शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करे।
- नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का संवर्धन करे।
- राष्ट्रीय विकास में सार्थक योगदान दे।

कार्यक्रम स्थल:

सभागार, विज्ञान भवन, चेरी-मनातू, परिसर,
झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची

संरक्षक:

प्रो॰ सारंग मेढेकर, कुलपति, झा. के. वि., राँची

कार्यक्रम निर्देशक
प्रो॰ तपन कुमार बसंतिया
डीन, शिक्षा संकाय

कार्यक्रम सह-निर्देशक
प्रो॰ विमल किशोर
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग

कार्यक्रम समन्वयक
डॉ ॰विजय कुमार यादव
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

कार्यक्रम सह-समन्वयक
डॉ. मनोहर कुमार दास
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

आयोजन समिति

डॉ॰ शशि सिंह, सह आचार्य, झा. के. वि., राँची
डॉ॰ मानवी यादव, सहायक आचार्य, झा. के. वि., राँची
डॉ॰ नीरा गौतम, सहायक आचार्य, झा. के. वि., राँची
सुश्री॰ एंजेल नाग, सहायक आचार्य, झा. के. वि., राँची
डॉ॰ शिल्पी राज, सहायक आचार्य, झा. के. वि., राँची
डॉ॰ रामकृष्णा रेड्डी, सहायक आचार्य, झा. के. वि., राँची
श्री सुमन्ता हलदर, सहायक आचार्य, झा. के. वि., राँची

शोध/आलेख भेजने के दिशा-निर्देश:

कृपया अपना शोध/आलेख सारांश 200-250 शब्दों में एवं शोधपत्र/आलेख हिंदी या अंग्रेजी में यूनिकोड, कोकीला, Times New Roman साइज 14/12, अधिकतम शब्द सीमा 3000 से 4000 शब्द में **office.edu@cuj.ac.in** पर प्रेषित करें एवं लिंक के माध्यम से पंजीकरण करें। **नोट:** चयनित शोध पत्रों/आलेखों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा।

पंजीकरण तथा शोध/आलेख भेजने की अंतिम तिथि: 15 अप्रैल 2026

पंजीकरण लिंक: https://forms.gle/5rWscV2ks2vi29ku5

पंजीकरण शुल्क: मात्र 200 रुपये

A/C: 7277000100024026
Account Name: National Seminar Education Department
Bank: Punjab National Bank, Branch: CUJ, Ranchi
IFSC: PUNB0727700

संपर्क विवरण: डॉ॰ विजय कुमार यादव - 8668897230